Unit-3
BA-II
Paper-4

Date
07/04/2021

Dr Raj Gopal
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

Opposition of Proposition
(तर्कवाक्यों का विरोध)

जब भिन्न-भिन्न वाक्यों का उद्देश्य और विधेय पद एक होता है, परन्तु गुण या परिमाण या दोनों में भेद रहे तो उसके संबंध को वाक्यों का विरोध कहा जाता है। यदि एक वाक्य भावात्मक है तो दूसरा निषेधात्मक तो गुण का भेद हुआ। यदि एक पूर्णव्यापी हो और दूसरा अंशव्यापी तो परिणाम का भेद हुआ। यदि एक भावात्मक पूर्णव्यापी (A) हो और दूसरा निषेधात्मक अंशव्यापी (O) या एक निषेधात्मक पूर्णव्यापी (E) और दूसरा भावात्मक अंशव्यापी (I) हो तो गुण और परिमाण दोनों में भेद हुआ। इस प्रकार के संबंध को वाक्यों का विरोध (Opposition of Proposition) कहा जाता है।

जब दो भिन्न वाक्यमें उद्देश्य और विधेय पद अलग-अलग होते है तो उनमें आपस में कोई संबंध नहीं होता है जैसे- सभी बिहारी भारतीय है, और कोई घोड़ा बैल नहीं है। क्योंकि भिन्न-भिन्न पदार्थों के विषय में भिन्न-भिन्न बातें कही जाती है इसलिए इन दोनों वाक्यों में आपस में कोई संबंध नहीं है। दो तर्क-वाक्यों में आपस में संबंध होने के लिए उनके उद्देश्य और विधेय पदों का एक होना आवश्यक है। साथ ही उद्देश्य और विधेय पद एक होने हुए भी उनके गुण या परिमाण या दोनों में भेद होना आवश्यक है।

विरोध के प्रकार (Kinds of Opposition) :- दो वाक्यों में जिनके उद्देश्य और विधेय एक हो पर गुण, परिमाण या दोनों में भेद हो चार प्रकार के संबंध होते है। अतः वाक्यों का विरोध चार प्रकार का

होता है। (1) उपाश्रितता (Subalternation) (2) विपरीतता (Contrariety) (3) अनुविपरीतता (Subcontrariety) (4) व्याघातकता (Contradictory) निरपेक्ष तर्कवाक्य A, E, I और O विरोध संबंध से आपस में जुड़े हैं। तर्कशास्त्रियों ने इन संबंधों को एक वर्ग द्वारा समझाया है। जिसे तर्क-वाक्यों का विरोध वर्ग (Square of opposition) कहते हैं।

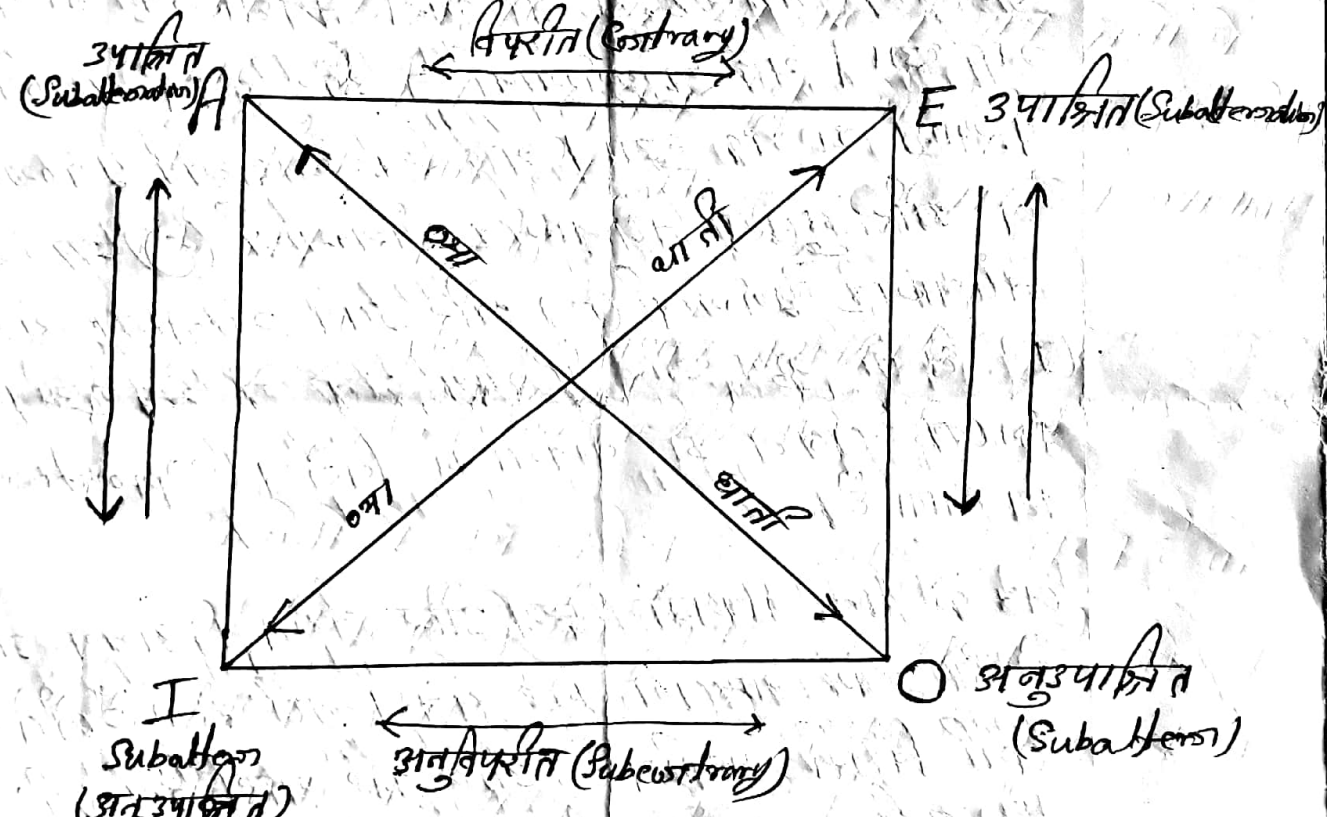

इस वर्ग की रेखाएँ और विभिन्न तर्क-वाक्यों के संबंध को स्पष्ट करते हैं।

(1.) उपाश्रितता (Subalternation) ⇒ यह दो वाक्यों का संबंध है जिनके उद्देश्य और विधेय एक हो या उनमें केवल परिमाण का अंतर हो, जैसे 'A' और 'I' या 'E' और 'O' जैसे (1) सभी मनुष्य मरणशील है। (A)
कुछ मनुष्य मरणशील है। (I)

Scanned with CamScanner